इस्लाम का संक्षिप्त परिचय (2 का भाग 2)

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: लेख इस्लाम की मान्यताएं इस्लाम क्या है

द्वारा: Daniel Masters, AbdurRahman Squires, and I. Kaka

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 09 Nov 2021

क़ुरआन

अरबी शब्द "अल-क़ुरआन" का शाब्दिक अर्थ है "पाठ"। जब इस्लाम के संबंध में उपयोग किया जाता है, तो क़ुरआन शब्द का अर्थ मानवजाति के लिए ईश्वर का अंतिम संदेश है, जो पैगंबर मुहम्मद के लिए प्रकट हुआ था। क़ुरआन, जिसे कभी-कभी कुरान लिखा जाता है, शाब्दिक रूप से ईश्वर का शब्द है - जैसा कि यह स्पष्ट रूप से बार-बार कहता है। अन्य पवित्र ग्रंथों के विपरीत, क़ुरआन अपने शब्दों और अर्थ दोनों में जीवित भाषा में पूरी तरह से संरक्षित है। अरबी भाषा में क़ुरआन एक जीवित चमत्कार है; और अपनी शैली, रूप और आध्यात्मिक प्रभाव में अद्वितीय होने के लिए जाना जाता है। मानवजाति के लिए ईश्वर का अंतिम रहस्योद्घाटन, क़ुरआन, पैगंबर मुहम्मद को 23 वर्षों की अवधि में प्रकट किया गया था।

कई अन्य धार्मिक पुस्तकों के विपरीत, जो लोग क़ुरआन को मानते थे वो हमेशा इसे ईश्वर का वचन मानते थे, अर्थात यह कोई एक धार्मिक परिषद द्वारा लिखी कोई किताब नहीं थी। साथ ही, पैगंबर मुहम्मद के जीवन के दौरान मुस्लिम और गैर-मुस्लिम दोनों समुदायों के सामने सार्वजनिक रूप से क़ुरआन का पाठ किया गया था। पूरे क़ुरआन को भी पैगंबर के जीवनकाल में पूरी तरह से लिखा गया था, और पैगंबर के कई साथियों ने पूरे क़ुरआन के शब्द-दर-शब्द को याद किया जब-जब यह प्रकट हुआ था। इसलिए, अन्य धर्मग्रंथों के विपरीत, क़ुरआन हमेशा आम विश्वासियों के हाथों में था; इसे हमेशा ईश्वर का वचन माना जाता था और व्यापक रूप से याद किए जाने के कारण, इसे पूरी तरह से संरक्षित किया गया था।

क़ुरआन की शिक्षाओं के संबंध में - यह सभी मानवजाति को संबोधित एक सार्वभौमिक ग्रंथ है, और केवल एक विशेष जनजाति या "चुने हुए लोगों" को संबोधित नहीं किया जाता है। यह जो संदेश देता है वह कोई नई बात नहीं है, लेकिन सभी पैगंबरों का एक ही संदेश है - सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति समर्पित हों और केवल उसकी ही पूजा करें। जैसे, क़ुरआन में ईश्वर का रहस्योद्घाटन मनुष्यों को ईश्वर के एक होने में विश्वास करने और उनके द्वारा भेजे गए मार्गदर्शन के अनुसार अपने जीवन को जीने के महत्व को सिखाने पर केंद्रित है। इसके अलावा, क़ुरआन में पहले आये पैगंबरो की कहानियां हैं, जैसे कि इब्राहिम, नूह, मूसा और यीशु; साथ ही ईश्वर के आदेश और ईश्वर द्वारा निषिद्ध किये गए कार्य। आधुनिक समय में जहां इतने सारे लोग संदेह, आध्यात्मिक निराशा और "राजनीतिक शुद्धता" में फंस गए हैं, क़ुरआन की शिक्षाएं हमारे जीवन की खालीपन और आज की दुनिया में व्याप्त उथल-पुथल का समाधान पेश करती हैं। संक्षेप में, क़ुरआन उत्कृष्टता के मार्गदर्शन की पुस्तक है।

पैगंबर मुहम्मद

कई धर्मों के संस्थापकों के विपरीत, इस्लाम के अंतिम पैगंबर एक वास्तविक प्रलेखित और ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। वह इतिहास की पूरी रोशनी में जिए, और उनके जीवन के सबसे सूक्ष्म विवरण ज्ञात हैं। मुसलमानों के पास न केवल ईश्वर के वचनों का पूरा पाठ है जो मुहम्मद को प्रकट किया गया था, बल्कि उन्होंने "हदीस" में उनकी बातों और शिक्षाओं को भी संरक्षित किया है। इसके बाद, यह समझा जाना चाहिए कि मुसलमान मानते हैं कि पैगंबर मुहम्मद केवल ईश्वर द्वारा चुने गए व्यक्ति थे, और वह किसी भी तरह से दिव्य नहीं हैं। गुमराह करने की इच्छा से बचने के लिए, पैगंबर मुहम्मद ने मुसलमानों को उन्हें "ईश्वर के दूत और उनके दास" के रूप में संदर्भित करना सिखाया। ईश्वर के अंतिम पैगंबर का मिशन केवल यह सिखाना था कि "सर्वशक्तिमान ईश्वर के अलावा कुछ भी दैवीय या आराधना के योग्य नहीं है", साथ ही यह ईश्वर के रहस्योद्घाटन का एक जीवंत उदाहरण है। सरल शब्दों में, ईश्वर ने मुहम्मद को रहस्योद्घाटन भेजा, जिन्होंने बदले में इसे सिखाया, इसका प्रचार किया, इसे जीया और इसे व्यवहार में लाया।

इस तरह, मुहम्मद बाइबिल के कई पैगंबरो के अर्थ में सिर्फ एक "पैगंबरो" से कहीं अधिक थे, क्योंकि वह एक राजनेता और शासक भी थे। वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने ईश्वर की सेवा में एक विनम्र जीवन जिया, और एक आदर्श मित्र, पति, शिक्षक, शासक, योद्धा और न्यायाधीश होने का अर्थ दिखाकर एक सर्वव्यापी धर्म और जीवन शैली की स्थापना की। इस कारण से, मुसलमान उसका अनुसरण अपने लिए नहीं, बल्कि ईश्वर की आज्ञाकारिता के लिए करते हैं, क्योंकि मुहम्मद ने न केवल हमें दिखाया कि हमें अपने साथी मनुष्यों के साथ कैसे व्यवहार करना है, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें दिखाया कि कैसे ईश्वर से संबंधित और उसकी पूजा करें; उसी तरह से

उसकी पूजा करें जिससे वह प्रसन्न हो।

अन्य पैगंबरो की तरह, मुहम्मद को अपने लक्ष्य के दौरान बहुत विरोध और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। हालाँकि, वह हमेशा धैर्यवान और न्यायप्रिय रहे, और उन्होंने अपने दुश्मनों के साथ अच्छा व्यवहार किया। उनके मिशन के परिणाम बहुत सफल रहे, और भले ही उनका मिशन पृथ्वी पर सबसे पिछड़े और दूरस्थ स्थानों में से एक में शुरू हुआ, मुहम्मद की मृत्यु के सौ वर्षों के भीतर, इस्लाम स्पेन से चीन तक फैल गया था। पैगंबर मुहम्मद ईश्वर के सभी पैगंबरों में सबसे महान थे, इसलिए नहीं कि उनके पास नए सिद्धांत या बड़े चमत्कार थे, बल्कि इसलिए कि उन्हें अंतिम रहस्योद्घाटन को सहन करने के लिए चुना गया था जो ईश्वर से मानवजाति के लिए आया था, जो सभी स्थानों, समय और लोगों के लिए उपयुक्त है, और अंतिम दिन तक चिरस्थायी और अपरिवर्तनीय रहेगा।

जीवन जीने का इस्लामी तरीका

पवित्र क़ुरआन में, ईश्वर मनुष्यों को सिखाता है कि वे उसकी पूजा करने के लिए बनाए गए थे, और यह कि सभी सच्ची पूजा का आधार ईश्वर की चेतना है। चूंकि इस्लाम की शिक्षाओं में जीवन और नैतिकता के सभी पहलुओं को शामिल किया गया है, इसलिए सभी मानवीय मामलों में ईश्वर-चेतना को प्रोत्साहित किया जाता है। इस्लाम यह स्पष्ट करता है कि सभी मानवीय कार्य पूजा के कार्य हैं यदि वे केवल ईश्वर के लिए और उनके ईश्वरीय कानून के अनुसार किए जाते हैं। जैसे, इस्लाम में पूजा धार्मिक कर्मकांडों तक ही सीमित नहीं है।

इस्लाम की शिक्षा मानव आत्मा के लिए एक दया और उपचार के रूप में कार्य करती है, और विनम्रता, ईमानदारी, धैर्य और दान जैसे गुणों को दृढ़ता से प्रोत्साहित किया जाता है। इसके अतिरिक्त, इस्लाम गर्व और आत्म-धार्मिकता की निंदा करता है, क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर मानव धार्मिकता का एकमात्र न्यायाधीश है।

मनुष्य की प्रकृति के बारे में इस्लामी दृष्टिकोण भी यथार्थवादी और संतुलित है। मनुष्य को स्वाभाविक रूप से पापी नहीं माना जाता है, लेकिन उसे अच्छाई और बुराई दोनों के लिए समान रूप से सक्षम माना जाता है।

इस्लाम यह भी सिखाता है कि आस्था और कर्म साथ-साथ चलते हैं। ईश्वर ने लोगों को स्वतंत्र इच्छा दी है, और किसी के विश्वास का माप उसके कर्म और कार्य हैं। परन्तु मनुष्य भी निर्बल बना हुआ है और नित्य पाप में पड़ता है। यह मनुष्य का स्वभाव है जैसा कि ईश्वर ने अपनी बुद्धि में बनाया है, और यह स्वाभाविक रूप से "भ्रष्ट" है और इसे सुधरने की आवश्यकता है। यही कारण है कि पश्चाताप का

मार्ग सभी मनुष्यों के लिए हमेशा खुला रहता है, और सर्वशक्तिमान ईश्वर पश्चाताप करने वाले पापी को कभी भी पाप न करने वाले से अधिक प्यार करता है।

एक इस्लामी जीवन का सही संतुलन ईश्वर के स्वस्थ भय के साथ-साथ उसकी अनंत दया में एक ईमानदार विश्वास के द्वारा स्थापित किया जाता है। ईश्वर के भय के बिना जीवन पाप और अवज्ञा की ओर ले जाता है, जबकि यह विश्वास करते हुए कि हमने इतना पाप किया है कि ईश्वर हमें क्षमा नहीं करेगा केवल निराशा की ओर ले जाता है। इस सन्दर्भ में, इस्लाम यह शिक्षा देता है कि पथभ्रष्ट ही अपने पालनहार की दया से निराशा होता है।

इसके अतिरिक्त, पैगंबर मुहम्मद को दिए गए पवित्र क़ुरआन मे इसके बाद के जीवन और न्याय के दिन के बारे में बहुत सारी शिक्षाएं शामिल हैं। इसके कारण, मुसलमानों का मानना है कि सभी मनुष्यों को अंततः उनके सांसारिक जीवन में उनके विश्वासों और कार्यों के लिए ईश्वर द्वारा आंका जाएगा। मनुष्यों का न्याय करने में, सर्वशक्तिमान ईश्वर दयालु और न्यायी दोनों होंगे, और लोगों का न्याय केवल उसी के लिए किया जाएगा जो वे करने में सक्षम थे।

इतना ही कहना काफ़ी है कि इस्लाम शिक्षा देता है कि जीवन एक परीक्षा है, और यह कि सभी मनुष्य ईश्वर के सामने जवाबदेह होंगे। परलोक के जीवन में एक ईमानदार विश्वास एक अच्छी तरह से संतुलित और नैतिक जीवन जीने की कुंजी है। अन्यथा, जीवन को अपने आप में एक अंत के रूप में देखा जाता है, जिससे मनुष्य अधिक स्वार्थी, भौतिकवादी और अनैतिक हो जाता है।

बेहतर जीवन के लिए इस्लाम

इस्लाम सिखाता है कि सच्चा सुख केवल ईश्वर की चेतना से भरा जीवन जीने और ईश्वर ने हमें जो दिया है उससे संतुष्ट रहने से ही मिल सकता है। इसके अलावा, सच्ची "स्वतंत्रता" हमारी आधारभूत मानवीय इच्छाओं द्वारा नियंत्रित होने और मानव निर्मित विचारधाराओं द्वारा शासित होने से मुक्ति है। यह आधुनिक दुनिया में कई लोगों के दृष्टिकोण के विपरीत है, जो "स्वतंत्रता" को बिना किसी अवरोध के अपनी सभी इच्छाओं को पूरा करने की क्षमता मानते हैं। इस्लाम का स्पष्ट और व्यापक मार्गदर्शन मनुष्य को जीवन में एक सुपरिभाषित उद्देश्य और दिशा प्रदान करता है। इस्लाम के मानव-भाईचारे के सदस्य होने के अलावा, इसकी अच्छी तरह से संतुलित और व्यावहारिक शिक्षाएं आध्यात्मिक आराम, मार्गदर्शन और नैतिकता का स्रोत हैं। सर्वशक्तिमान ईश्वर के साथ एक सीधा और स्पष्ट संबंध, साथ ही उद्देश्य और अपनेपन की भावना जो एक मुसलमान के रूप में महसूस करता है, एक व्यक्ति को रोजमर्रा की जिंदगी की कई चिंताओं से मुक्त करता है।

संक्षेप में, इस्लामी जीवन शैली शुद्ध और स्वस्थ है। यह नियमित प्रार्थना और उपवास के माध्यम से आत्म-अनुशासन और आत्म-नियंत्रण का निर्माण करता है, और मनुष्यों को अंधविश्वास और सभी प्रकार के नस्लीय, जातीय और राष्ट्रीय पूर्वाग्रहों से मुक्त करता है। ईश्वर के प्रति जागरूक जीवन जीने को स्वीकार करने और यह महसूस करने से कि केवल एक चीज जो लोगों को ईश्वर की दृष्टि में अलग करती है, वह है उनकी चेतना, एक व्यक्ति की सच्ची मानवीय गरिमा का एहसास होता है।

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/hi/articles/1397

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।